अनुवाद प्रक्रिया एवं सिद्धांत

डॉ आशा मीणा
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग
मानविकी एवं भाषा संकाय
महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी, बिहार
Email: ashameena@mgcub.ac.in

अनुवाद प्रक्रिया एवं सिद्धांत

- अनुवाद प्रक्रिया का अर्थ
- अनुवाद के चरण
- अनुवाद पुनरीक्षण/ विश्लेषण
- पुनरीक्षण के सोपान
- अनुवाद तथा समतुल्यता का सिद्धांत

अनुवाद प्रक्रिया का अर्थ

- अनुवाद प्रक्रिया के अंतर्गत दो भाषाओं का प्रयोग होता है
- प्रथम भाषा जिसमें हम समझते हैं तथा
- दूसरी भाषा जिसे हम समझाते हैं
- समझाने हम समझने की यही प्रक्रिया अनुवाद प्रक्रिया कहलाती है

अनुवाद के चरण

नाइडा के अनुसार अनुवाद के तीन चरण है

- विश्लेषण (i) भाषा के स्तर (ii) विषयवस्तु के स्तर पर
- अंतरण/ भाषाअंतरण
- पुनर्गठन

- **विश्लेषण**
- **भाषा के स्तर पर :**

- अनुवादक मूल पाठ की शब्द पर, वाक्य की संरचना को देखकर अर्थ ग्रहण करने का प्रयत्न करता है
- इसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाषा होती है
- भाषा के माध्यम से वह शब्दों का सरल व जटिल दोनों प्रकार का अर्थ ग्रहण करता है

- **विषय वस्तु के स्तर पर**
  - अनुवादक भाषा के माध्यम से उस विषय को ग्रहण करता है जो उसमें निहित है
  - सही विषय वस्तु ग्रहण करने हेतु अनुवादक को संदर्भ और परिस्थिति पर विचार करना होता है
  - यदि वह वैज्ञानिक अथवा तकनीकी विषय होते हैं तो उसे समझने लायक ज्ञान जरूरी होता है
  - यह जरूरी नहीं है कि वह उस विषय का विशेषज्ञ हो।

- **उदाहरण:**

- Transfer शब्द का अनुवाद
- (i) हस्तांतरण
- (ii) स्थानांतरण
- संदर्भ के अनुसार अनुवाद किया जाता है
- Communication शब्द का बहूअर्थी प्रयोग होता है :-
- (i) पत्राचार (कार्यालय में)
- (ii) संचार (प्रेक्षण के अर्थ में)
- (iii) संप्रेक्षण (साहित्य के अर्थ में)

- **अंतरण/ भाषाअंतरण:**
  - एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में कहना ।
  - जब एक भाषा से दूसरी भाषा में संदेश दिया जाता है तो भाव नहीं बदलने चाहिए
- **पुनर्गठन :**
  - अनुवादक जब मूल पाठ का विश्लेषण करता है तब उसे मूल पाठ में नए-नए अर्थ ग्रहण करने को मिलते हैं
  - विश्लेषण करने के पश्चात पाठ का पुनर्गठन किया जाता है ।

अनुवाद पुनरीक्षण

- मूल अर्थ भाव एवं संवेदना को अक्षुण्ण रख मूल की ध्वनि तथा यथासंभव आकार को मूलवत बनाए रखने चुनौती अनुवादक के समक्ष रहती है
- उसी मूल अर्थ भाव संवेदना को बनाए रखने की महत्वपूर्ण भूमिका अनुवादक की रहती है।
- पुनरीक्षण अनुवाद का संशोधन संवर्धन परिवर्धन करता है।

पुनरीक्षण के सोपान

- पाठ पठन
- विषयगत अंतर
- शैली

- **पाठ पठन :**
- मूल पाठ एवं अनुदित दोनों पाठों का पठन किया जाता है
- उसके पश्चात यह सुनिश्चित किया जाता है कि दोनों पाठों में अर्थ शब्द पर को लेकर किसी प्रकार का भ्रम उत्पन्न ना हो।

- **विषयगत अंतर:**
  - अनुवादक अनुवाद करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखता है कि जिस संदर्भ में जो बात कही जा रही है उसी संदर्भ में शब्दों का प्रयोग हो।
  - गलत शब्दों के चयन से अर्थ का अनर्थ हो जाता है
- **शैली :**
  - शैली का प्रयोग विषय के अनुसार किया जाता है
  - शैली का प्रयोग जिस रूप में किया जाता है भाषा भी उसी के अनुरूप बदलती रहती है
  - अनुवादक को शैली एवं भाषा के प्रयोग का ध्यान रखना होता है।

• अनुवाद तथा समतुल्यता का सिद्धांतः

- समतुल्यता :
- वर्तमान समय में समतुल्यता को अनुवाद की मुख्य कसौटी माना गया है।
- समतुल्यता को सममूल्यता और प्रभाव समता के नाम से भी जाना जाता है।
- इस प्रणाली में- मूलभाषा और लक्ष्य भाषा के संदर्भ की परिवर्तनशीलता को ध्यान में रखते हुए अभिव्यक्त-मूल्यों की समानता को बनाए रखना अनुवाद प्रणाली का मुख्य तत्व है।
- समतुल्यता शब्द 'तुल्य' में 'सम' उपसर्ग और 'ता' प्रत्यय लगने से बना है।
- मूल्य का अर्थ है- रचना के भीतर वर्तमान रहनेवाला ऐसा उद्देश्य जो किसी सामाजिक आदर्श या व्यक्तिगत उच्चता आदि से जोड़े।
- अनुवाद कार्य में स्रोत भाषा के लिए उपलब्ध पर्यायों की तुलना को समतुल्यता कहा जाता है।
- ऐसी समानता तुलना की दृष्टि से होती है।
- वह वाक्यस्तरीय, अर्थस्तरीय तथा संदर्भस्तरीय होती है।
- इस बात को दूसरे तरीके से कहे तो- मूलपाठ और लक्ष्यपाठ समान नहीं होते।
- अतः अनुवादक का प्रयत्न होता है कि मूलपाठ और लक्ष्यभाषा अर्थ के मूलगुण में यथासंभव निकट हो।

- **इन्हें अध्ययन की दृष्टि से निम्न प्रकार से वर्गीकरण कर सकते हैं:-**

1. ध्वनिगत समतुल्यता
2. शब्दगत समतुल्यता
3. पदगत समतुल्यता
4. वाक्यगत समतुल्यता
5. अर्थगत समतुल्यता
6. शैलीगत समतुल्यता
7. उद्देश्यगत समतुल्यता
8. सामाजिक संदर्भगत समतुल्यता
9. सांस्कृतिक संदर्भगत समतुल्यता
10. धार्मिक संदर्भगत समतुल्यता

सारांश

- आज का युग अनुवाद का युग है क्योंकि जीवन के हर क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता का अनुभव किसी-न-किसी रूप में अवश्य किया जा रहा है।
- मौजूदा दौर में अनुवाद अपनी प्रारंभिक साहित्यिक सीमा को लाँघकर ज्ञान-विज्ञान की हर शाखा में सक्रिय है।
- भारत जैसे बहुभाषा-भाषी संप्रेषण के संवाहक के रूप में अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका स्वयंसिद्ध है।
- विश्व-संस्कृति के विकास में भी अनुवाद की भूमिका सर्वविदित है। इतना ही नहीं अनुवाद, दो भिन्न-भिन्न भाषाओं के बीच सांस्कृतिक सेतु का काम करता है
- जिससे दो भिन्न समुदायों, समाजों के मध्य भावात्मक एकता स्थापित होती है।
- दुनिया के जिन देशों में विभिन्न जातियों एवं संस्कृतियों का मिलन हुआ है
- वहाँ सामासिक संस्कृति के निर्माण में अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

धन्यवाद